

परीक्षा सं. _____

विभाग **अद :**

नाम **दशपूर्णभासपदाथविद्वती :**

रा. सं. ~~२३२~~ **१-३१, ३३.**

आवक सं. _____

प्रश्न सं. (संकीर्ण)

२६ वृत्ति सं. (संकीर्ण) **१०**

आवक सं. **"२३२"**

वि. सं. **दे. ना.**

आवक सं. **क/ग.**

वि. विवरण **X**

002812

अ. य. अ. ग. (२१३)

प्री. एल. ग. प्री. - १९६३ प. म. प्री. - १९६३ - १९६४ - १९६५ - १९६६ - १९६७





तव निचायित ना. वो विज्ञानि
 मेला तवा

संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय

राम दर्शनार्थ संप्रदाय विज्ञानि
 कात्यायनीयः

पत्राणि ३२

७२८

संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय



पूजाया शांतासा मुनिः॥ अमृतपत्रसद्वत्॥ अमृतवापा नमः॥ यजमानः॥ श्री॥
 श्रीगणेशाय नमः॥ प्रतिपदि श्री हवनीयस्त्रीनां सप्तोपस्काराः॥
 कृत्वाः॥ उद्धरी॥ श्री हवनीयः॥ दक्षिणाग्निः॥ उद्धरी॥ नतोग्य न्वाधा न्ना॥
 षट्समिधोऽही च॥ अग्निमष्टकपाले नृपुण्ड्रा रोना॥ अग्निजो
 मावेतराये न॥ अग्निजामावेकः॥ दक्षकपाले न॥ पुरो गरो न॥ सद्यो ह
 यजे॥ श्रीवा॥ तत्र पद रो वत्त॥ ब्रीहिसि यगिः॥ यवैर्वा॥ अन्वा हाये
 दिरा॥ वैकुण्ठिक पदाया ना यथाका तृत्वा स्मृत्पे म॥ महुत्तमेता प्राक्
 पद॥ मोमजि व श्री वि हवे वस्तु वयन्ने धीस्त्वं प म॥ महुत्तमेता प्राक्
 यो न तस्मिन् पाद्यदे रा पृ त ना ज ये म॥ श्री हवनीय स मी ध मा द धा नि
 तृप्ती हिली पा ए व गा ह पत्य द्दि ता ग्योः॥ अमुदिते ब्रह्मवती॥ तत्र
 अदा सने॥ ब्रह्मयम मा नोऽप्रो ता ये शो वा मि स प्प्रा ह य जे तत्र मे
 दई॥ ब्रह्मराक्षसी ते व सि षु

ब्रह्मवती॥ अमृतपत्रसद्वत्॥ अमृतवापा नमः॥ यजमानः॥ श्री॥
 हवनीयस्य जगन्नाथः॥ ब्रह्मराक्षसी ते व सि षु
 तस्यापतिर्नृचवः॥ स्वर्देवसवितरेतत्वा क राते क ह स्प नि ब्रह्मराक्षस द ह
 मन्त्रे प्र ब्रविमि म नो ग य यो य त्री नृपु त्रे नृपु ब्रु ग जे न ग ल नृपु त्रे
 नृपु प्रजापतये प्रजापतिर्नृचवः॥ दक्षो ब्रह्मसृष्टिर्देवानां ब्रह्मा ह म नृपु
 रा॥ वा व स्प ते य त्र ज पा यो॥ जो पा या मि ति प्रत्ना ह॥ अमृतवापा हवनीय
 द्दि रा नि क्राम ति॥ अ ह दे धि रव न्यो द त शि षा न्य स्य स द ते सी द यो
 स्य त्या कृत र म ई ति ब्रह्म स द न मी इ ते॥ ब्रह्म स द ना तृ रा नि र स्य ति॥
 नि र सः॥ पाप्मा स द ते न य द्दि ष्य॥ इति द म ह ब्रह्म स तेः स द शि सी द
 मि॥ प्रसूतो देव न स नि त्र त द न ये प्र ब्र वी मि त द्वा य वे तृ ष्यि यो॥ ब्रह्म
 स द न आ ह व नी य म मि मु र व ऽ प वि श नि॥ वा ग्य त न्ना म्ना ज न वा द्वा

1121

臨

४१

अग्ने वाजं होषामि॥ अग्निषो माज्या वाजं प्रोक्षामि॥ पात्राणि देव्यायेति॥
 देव्याय कर्म सो सुदं देवयज्या ये यदो सुदं पराज बुभुवि देवस्त
 वृधामि॥ आदो वज्रप्रोक्ष॥ तं ही चार्त्त कृष्णाजिनं प्रोक्ष॥ उलुखलं प्रो
 क्ष॥ मसलं प्रोक्ष॥ शम्पा प्रोक्ष॥ ददं प्रोक्ष॥ उपलं प्राक्ष॥ सूपं प्रोक्ष॥
 पात्री प्रोक्ष॥ उपवेशं प्रोक्ष॥ कपा लाति॥ आत्यस्या ज्या दिना यज्या
 स दित पात्राणां प्रोक्ष॥ असं वरे प्रोक्षणी निधानं॥ ३॥ शम्पा सि ति
 क्षणा निना दानं॥ ४॥ शम्पा सि॥ अयेत्य पात्रेभ्यो वधू नो त्य वधू तमि
 ति॥ ५॥ अवधू तं र दौ वधू ता अरा तय॥ ६॥ दको पस्पृशति॥ प्रत्युती
 व मास शाल्य दित्या स्मृति ति॥ ७॥ अदित्या स्मृति ति॥ प्रति चादिति वेत्तु॥
 सन्ना सून्यो नि दधात्क लृश्वल नम द्विर सिग्ना वा सि ति वा॥ ८॥ अ द्विर

रम
 ४१-

तन्मेषो कृत्या हं

सि चान स्पत्य प्रतिवा दित्या स्पत्ये ह॥ दविश वपत्य ग्रेस्त नुरिति॥ १॥ अग्ने
 स्त नुर सि वा वो वि सत्त न देव वि त मे त्वा ग ह्म मि॥ बृह्मा वे ति मु सल
 मा दहो॥ २॥ बृहद्वा वा सि चान स्पत्य॥ सद द मित्य व दधा ति॥ ३॥ स इ
 दं दे वेभ्यो द विः न मि स सु श मि न मिषु॥ दविष् दे हिति त्रिरा ह
 य ति॥ ४॥ दविष् दे हिः॥ अतः पत्य व दं त्य न्यो द रव दुप ने कु कु रो स
 ति त्रिंश द्वा म्या द्वि र्दृ ष द र सक दुप ला॥ ५॥ कु कु रो सि मधु जि ह
 र स मूर्त मा व द न्न या व य र सं वा त र सं वा त रं न्य॥ ६॥ अग्नि धः स्त
 म्नी कं र नं॥ वर्ष वृद्ध म सी ति सूप मा दहो॥ ७॥ वर्ष वृद्ध म सि॥ प्रति
 वे ति द वि रु द्ध प ति॥ ८॥ प्रति वा वर्ष वृद्ध वे ह्म॥ परा ह त मि ति निष्पु न्ना
 ति॥ ९॥ परा ह त र द हः परा ह ता अरा तय॥ १०॥ दको पस्पृशति॥

वायुर्व इति विविनक्ति॥ ३॥ वायुर्वो विविनक्ति॥ त्रुसमर्पं॥ पुनः कंड
 ने॥ ५॥ उ वपने॥ ३॥ पुनने॥ विदुर्वीक ररा॥ अथ युः स्तरां निर सति॥
 ३॥ अप द तः र दं॥ ५॥ उ को प स्यु र्नि॥ दे वो व र ति पा त्रा नो प्या त्रि म
 त्र य ते॥ ३॥ दे वो वः स वि ता दि र रा प पा शिः प्र ति ३॥ शा वृ कि दे रा पा शि
 ना॥ ३॥ फ लो क रो ति॥ फ लो क र्ण क र्ण नि द धा ति॥ चै र व र्णो प धा ने यु
 ग प त्वा अ ग्नी त्वा धी णी र सी त्क प वे र मा दा या॥ ३॥ धी णी र सि॥ अ पा
 ग न इ लं गा रा न् प्र षः क रो ति॥ ३॥ अ पा जे अ जि मा मा द न हि निः क र्ण
 द र्ण द र्ण॥ क र्ण जि ना दा ते॥ ३॥ श र्मा सि॥ अ वे त्प त्त्र ज्यो व धू नो त्त्र व
 धू त मि ति॥ ३॥ अ व धू त र्ण व र्ण ता अ रा त र्ण॥ ५॥ उ को प स्यु र्नि॥
 प्र त्प ग्नी व मा स्त रा त्त्र दि त्वा स्तु गि ति॥ ३॥ अ दि त्वा स्त ग मि प्र ति त्वा दि

उद्दिष्टानस्य

तिवे च॥ स्या शून्ये तस्मिं दुख दधि खरा सी ति॥ ३॥ धि खरा सि प र्वा ता
 प्र ति चा दि त्वा स्तु वि त्॥ प श्चा र्ण म्या मु पो ह त्क दी दी दि व र ति॥ ३॥ दि
 व र्ण न नि र सि॥ ३॥ दु ख र्ण प ला धि ख रा सि ति॥ ३॥ धि ख रा सि प र्वा
 त यी प्र ति त्वा प र्वा त वे त्॥ ३॥ धा न्य म सि ति त दु ला नो प्या॥ ३॥ धा न्य म सि ति
 रु दि द वा त॥ ३॥ पि न हि र्ण य त्ते ति प्र ति म त्त्र॥ ३॥ पा रा य त्वा पि न णि॥ ३॥
 उ दा ता य त्वा पि णि॥ ३॥ व्या ना य त्वा पि न णि॥ ३॥ अ र्ण वि कृ क पा लो प धा
 न॥ ३॥ आ दे व य ज न त्रि त्वा रा मा ह त्वा॥ ३॥ आ दे व य ज न व द्वा क पा लो
 ना व क्ता द य ति कृ व न सी ति॥ ३॥ कृ व न सी पृ थि वी द र्ण द ब्र ह्म व नि
 त्वा द त्र व नी स त्वा व न्क प द धा मि त्वा र्ण य स्य व धा या॥ ३॥ अ र्ण ग र्ण
 शून्ये ग रं नि द धा त्त्र जे ब ह्मे ति॥ ३॥ अ जे ब ह्म ग र्ण पा॥ ३॥ अ र्ण ध र
 मि ति प श्चा त्॥ ३॥ ध र्ण रा म र्ण त रि द र्ण द ब्र ह्म व नि चा द त्र व ना

॥५॥

॥५॥

त्वाङ्गद्वयवती सजातवन्कपदधामित्राद्वयस्य वधाया॥ पुरस्ताद्वै
 मिति॥ १॥ इन्द्रमसिदिवदृष्टद्वयवती त्वाङ्गद्वयवती सजातवन्कपद
 धामित्राद्वयस्य वधाया॥ विश्वात्त इति दक्षिणा तः॥ १॥ विश्वात्त
 स्ता शास्त्रोऽपदधामि॥ समं विनूज्य देवदक्षिणा त एव मुत्तर
 तश्चित्तेति॥ १॥ वितस्कोर्ध्वं वितः॥ अजो ब्रह्मज्जराणि॥ तू
 वा एव मे कादशाणि योमीयसु॥ अत्रिकंदक्षिणा तः॥ अज
 रा मित्यगारैरज्य हति॥ १॥ अजो मजिरसं तपसा तप्यथैर॥
 पदार्थत्रय युगपत्॥ अपिष्ट वेखरां॥ ब्रह्मज्जराणि निवा
 पः॥ १॥ उपसर्जनी रधि सयति पिष्टस्य मा रोफुनिर्वापत्येता म
 दिना मित्या ज्य॥ १॥ महीना पयोसि॥ अनिध उपसर्जनं न्यसि स

यरां॥ वेदोसीति यजमानो वेदे करोति॥ यजमानस्य वेदबंधः॥ १॥ वेदोसि
 तेन च वेदे च वेदे वेदो वेदो न वस्ते न म ह्यवेदो नूयाः॥ दीर्घा
 मितिकुक्ताजिने प्रोदति॥ १॥ दीर्घा मनु प्रसितिमा मुखेधा देवो वस
 विता द्विरण्यपाणिः॥ प्रतिष्ठं प्राणं वक्षिरेण पाणिना॥ बद्धं ये वैता
 द्देते॥ पात्राटः सपवित्रायां पिष्ट्वा वपति देवस्य वैति॥ १॥ देव
 स्य वा सवितुः प्रसवे सिनो ब्रह्म पुष्टो हस्तायां सवपा मि॥ स
 पशस्य पश्चादुपविश्य तं वै दिवोपसर्जनी शनयत्तं नमः पवि
 त्रायां प्रतिष्ठं ह्नाति सप्तापदति॥ १॥ सप्तापदं श्वधिसिः सप्तो श्वध
 यो रसेना॥ सः देवतीर्जगतीति॥ पृथ्वी तां स मधमती मधमती
 ति॥ पृथ्वी तां॥ संश्रोति जनमत्ये वैति॥ १॥ जनमत्ये वा संश्रोति॥ हविः

संवपने॥ पुशेराशबेचने॥ सभेविजयासठ॥ इरिख्येनूजततइ दमजे
 रिदमजीखोमयेरिति॥ इ दमजेहे॥ इ दमजीखोमये हो॥ यथा देव
 तमंन्यत॥ इखेलेत्याज्यमधिअयत्तं न्यः॥ इ खेवाअधिअया
 मि॥ अधयुः प्रयमं पुशेरां वजो पजहेरा॥ अग्निद्वितीयेपुशेरां
 कुशोपजहेरा॥ वजोसि तिपुशेरां युगपद॥ इ वजोसि विअयुः
 उरुप्रया इ तिप्रययतिआवक्तपाजमनतिपृथुं॥ इ उरुप्रया उरु
 प्रयस्योरुतेयतपतिप्रयतां॥ अग्निद्वितीयेपुशेरां
 इ वजोसि तिपुशेरां युगपद॥ इ वजोसि विअयुः
 करोत्तरिठर॥ इ त्रितीया अशतय इ तिसहाज्या॥ इ अत्रितर
 इ त्रितीया अशतय॥ इ दकोपस्य शनं॥ देवस्यतेतिअपरां॥

॥१॥

॥१॥

॥१॥

इ देवस्यासविताः अपयतुः वर्षीष्टेधिनाके॥२॥ माजेरित्याजतते॥३॥ इ मा
 जेसविष्वाः॥४॥ अतमेरु रिक्षुता वज्रिवासयतिजस्मनावेदेनाप
 खेरावा॥५॥ अतमेरु रिक्षुता तमेरु रयनयतमानस्यप्रजाचूयात्॥६॥ पा
 जं गुलिप्रजाजमात्रेनो निनयत्यत्रितयप्रत्यगसठस्येदनामंत्रित
 यचेतिप्रतिजं॥ प्राचं गुलिप्रतपनं॥ प्राचं वंननं॥ प्रतं वंननं॥ इ त्रि
 यनमम॥ इ एकतायत्ता निनया मि॥ इ दमेकायनमम॥ अन्वाहायं द
 दिश्वतति॥ अं गुलेश्वातां मया त्रीपश्चात्॥ प्रयम॥ द्वितीया॥ तृती
 या॥ चतुर्थ्या॥ अरती प्राची॥ प्रयम॥ द्वितीया॥ तृतीया॥ प्रयम॥
 द्वितीया॥ तृतीया॥ मध्य संजटितं॥ अग्निमग्नितोऽसौ॥ वेदिपतिस

॥८॥

महाविहतीयेगी दुतरत उक्त रे करेति॥ देवस्य त्रेडिस्वमा दायस
 त्रं॥ १॥ देवस्य त्रासवितुः परसवेष्टिनां बहु ज्ञापुष्टो हास्ता ज्ञो॥
 १॥ आददेधर कृत देवेन्यः॥ सन्ने कुत्राद हिरो न ज्ञापति इदं
 बाहुति॥ १॥ इदं स बाहु रसिष्ठ दहिताः स हस्य नृष्टि चततेना बाधुरसि
 ति॥ १॥ ते ज्ञापि खतो वधः॥ वेष्टा त्रं निवधात्क दकृष्टि ज्ञे वरमासि
 ति॥ १॥ पुष्टि ज्ञे वरमासि॥ पुष्टि नी देवयज्ञ नी त्रुहो तरेदिते प्रहर
 ति॥ १॥ पुष्टि विदेवयज्ञे श्वध्यास्तु लं ज्ञापति॥ सिखं॥ ब्रजंग
 केति पुरिखमा दहे॥ १॥ ब्रजंग कुगोष्ठानां॥ वर्य तु त इति वेदि प्रेक्षते॥
 १॥ वर्य तु तेष्टो॥ ब्रधाने कृत्करोति॥ १॥ ब्रधान देवस वितुः परम

॥८॥

स्यापुष्टि व्याः शते न पाशै यो स्या देष्टि यं वयं द्विष्मस्तम तो मा भौ क॥ अपार
 रुमि तिद्वितीयं प्रहरणा दि॥ १॥ अपारं पुष्टि ज्ञे देवयज्ञ नी दुध्यासां॥
 उदकोप स्पृशं॥ ब्रजंग केति पुरिखमा दहे॥ १॥ ब्रजंग कुगोष्ठानां॥
 वर्य तु त इति वेदि प्रेक्षते॥ १॥ वर्य तु तेष्टो॥ ब्रधाने कृत्करोति॥
 १॥ ब्रधान देवस वितुः परम स्याः शते न पाशै यो स्या देष्टि यं व
 वयं द्विष्मस्तम तो मा भौ क॥ अजि न्य स्य ल निदुक्त रम करो दिव
 मिति॥ १॥ अपर रो दिव मा सः॥ उदकोप स्पृशं॥ दूप्स स्त इति यो
 १॥ दूप्स स्त शो मा कं॥ ब्रजंग केति पुरिखमा दहे॥ १॥ ब्रजंग कुगोष्ठानां
 वर्य तु त इति वेदि प्रेक्षते॥ १॥ वर्य तु तेष्टो॥ ब्रधाने कृत्करोति
 ति॥ १॥ ब्रधान देवस वितुः परम स्याः शते न पाशै यो स्या देष्टि
 यं व वयं द्विष्मस्तम तो मा भौ क॥ तृप्सं व तु र्यं स त्रं॥ —॥

पुष्टि ज्ञे

ब्रह्मन् पूर्वपरिग्रहं परिगृहीत्यामि॥ सवित्रप्रसूतः पूर्वपरिग्रहं प
 रिगृहीत्वा रा॥ ३॥ नृनुवस्वर्बृहस्पतिर्ब्रह्माहं मानुशः॥ ३॥ परिगृहीत्वा
 रा॥ दक्षिणा तः पश्चाद्दुहर्तुं सख्यं स्मृतं नगा यत्रैतौ प्रतिमंत्रा॥
 ३॥ गायत्रेशावाक् दक्षपारिगृह्णामि॥ ३॥ त्रैष्टुभेन त्वाक् दक्षपारिगृ
 ह्णामि॥ ३॥ जागतेन त्वाक् दक्षपारिगृह्णामि॥ वेद्यां त्रिरुद्धिरया हह
 रत्रारिति॥ वेद्यां त्रिरुद्धिरया॥ आह हविर्हो वाग्निदेवा संमृशति॥
 ३॥ वेदिरव न नम्योक्तं॥ अमृमादि वेदिरव न नम्योक्तं॥ ब्रह्मन् ब्रह्मन् त
 रं परिगृहं परिगृहीत्यामि॥ सवित्रप्रसूतः पुनरं परिगृहं परिगृही
 त्वा रा॥ ३॥ नृनुवस्वर्बृहस्पतिर्ब्रह्माहं मानुशः॥ ३॥ परिगृहीत्वा रा॥ स्रद्धा
 स्मो नोर्जस्वतिति प्रतिमंत्रं पूर्ववत्॥ ३॥ स्रद्धा वासि शिवा वासि॥

३॥ स्मो न वासि मुखदा वासि॥ ३॥ ऊर्जस्वती वासि पत्रस्वती वा॥ पुरा कूरस्थ
 त्मनुमाष्टि॥ ३॥ पुरा कूरस्थ विष्टो विष्टिर्नृदादा यद्यपि वीती वदन्तु॥
 या मे रथं नृमसि स्वधा निस्तानु दिशो अमुदिश्य मंत्रे॥ इ
 त्मनुमाष्टि॥ अमुमां नृनां समिकरशां॥ अध्यासि वेदि प्रोक्षणी धा
 रयति॥ अतो पश्चात्तुष्टं ग्राह्यं॥ प्रोक्षणी शसा दधे धमं बहि रू
 पसा दधे सुवः संमृष्टि पत्नीः संनृह्या ज्योते देहि॥ वेद्यां प्रोक्षणी
 निदधाति॥ ३॥ द्विरव तो वयो सि॥ इति स्मृत्तुष्टं प्रहरति॥ अवशि
 ज्य पाणि॥ अपरे शा प्रणीता स्फ्य निदधाति॥ इध्मा नृदि॥ अ॥ पूर्व
 मिध्मं प्रणीता दक्षिणेन वा दृष्ट्या॥ वेदाग्निं पति॥ सुवंप्रतप्य पूर्व
 वत्॥ ३॥ प्रत्यष्टं रक्षं प्रत्यष्टं अरातयः॥ उदको पस्पृशन्ति॥ प्रादु
 क्रम्य वेदाग्निं रंतरतः प्राक् संम्राष्टुमि शित इति विषयः

संदि तौ पाणि आधर यत्न॥ अजये स मिथ्या माना यानु बहि॥ ११ नमः
 प्रवक्त्रे नमः पद्मे नमो नुर्यात्रे कर दम नुव ख्यति स दम नुव
 ख्यति शरमो वी ह स स्या तुष्टौ अप्रवि नी वा ह स रत्रिः आप श्रो
 राध य श्रवाक्॥ स मस्थित यत्नः स धर्मे दा सि प्रपद्ये ह मेव मा॥
 ॥१४॥-
 खेना मगृही यात्॥ न ते न वि श्य ते जा ते न नि श्य मा मा आ ज्ञा
 न्य पा ल्य वा यो अ ज्ञा ति व द॥ अं गु ल्य गा रा य व ह र्य॥ जा त
 वे दो र म या प श्रु म थि॥ प्र ति सं द ध्या त॥ व र्म मे श्रा वा पृ
 वी व म जि व र्म म श्रो व र्म मे सं तु ति र श्रि का॥ त द य वा वः प्र प
 म म सी यं ये ना म्भु सं अ जि दे वा अ सा म रु ज्जा व र त य जि जि
 या सः प य ज ना म म हो त्रं रु रा धां सं त न्म नि मे वे नु बू हि॥ - ॥-

इ द म हं पं च द शे न व ज्रे रा आ ह व म व बा धे॥ ब्र ह्म क्ता मि धे र नु व द्वा मि॥
 प्र जा प तै नु बू हि॥ स वि द प्र सू त क्ता मि धे र नु व द्वा मि॥ ११ नमः
 र्द ह स्य ति ब्र ह्मा हं म्या नु ष ॥ ११ अ नु बू हि॥ ११ अ नु बू हि॥ ११ अ नु बू हि॥
 वो वा जा अ जि य वो ह वि षं तो व ता न्या दे वा जि जा ति सु म यो ३
 प्र वो वा जा अ जि य वो ह वि षं तो व ता न्या॥ दे वा जि जा ति सु म यो ३
 प्र वो वा जा अ जि य वो ह वि षं ता व ता न्या॥ दे वा जि जा ति सु म यो ३
 म ग्न आ या दि वी त ये ग्ग रा नो ह व य दा त ये नि हो ता स सि व ति यो ३
 तं वा स द्दि रं जि शे व हे न व र्द या म सि॥ व ह को वा य वि षो ३
 स नः पृ ण्य स वा य म का दे व वि वा स सि॥ व ह द ग्ने सु वि यो ३
 मि ले न्यो न म स्य सि र स मं सि द र्श न ॥ स म जि वि धे ते व यो ३

वृशो अग्निः समिधं ते शो न देवा स नः॥ तं ह विष्मंत इह तो ३ वृ
 राशं वा वयं वृक्षराः समिधीमहि॥ अग्ने दीयतं वृहो ३ अ
 ग्निदूतं वृणीमहे होतारं विष्मवेदसं॥ अग्नयत्तस्य सुकृतो ३ स
 प्रिध्वीमा नो अथ रेग्निः पावक ईशः॥ यात्रि कृशस्त प्रीमसो ३
 समिधो अग्न आहुत देवान्यद्विस्वधर॥ तं हि हव्यं वातसो ३
 मातृ होता दुवस्य ताग्निप्रत्यध रे वृणीध हव्यं वा हनो - - ३
 मातृ होता दुवस्य ताग्निप्रत्यध रे॥ वृणीध हव्यं वा हनो - - ३
 मातृ होता दुवस्य ताग्निप्रत्यध रे वृणीध हव्यं वा हनो - - ३
 मग्ने मसो अग्नि ब्राह्मणा आरत॥ यत्र मानस्य प्रवरं नृवं नाना
 धं यानीना॥ देवैर्हो मन्विदुरुत्तिष्ठतो विप्रान् मधितकरी विस्तोत्र

हसं चितो वृता हवनः प्रणीयं नाना रपि रध्वराणां मत्तु होता नृ-
 णो हव्यं वा वृ॥ आस्या त्रं नृदेवानां वमसो देवपा नो रं इ वाजिने
 मिदे वां स्ते परि नृ रस्या बह देवान्यत्तमानाया॥ अग्निमग्न आश्व वहा
 सोम माश्व वहा॥ अग्निमावहा॥ उपो सु॥ अग्निपो मो॥ उच्चैः॥ आश्व वहा॥
 अग्निपो मा वाश्व वहा॥ उपो सु॥ विष्ठा॥ उच्चैः॥ आश्व वहा॥ इन्द्राग्नि आ
 वहा॥ देवां आश्व पा आश्व वहा॥ अग्नि होत्रा मा वहा संमहि मान
 माश्व वहा॥ आ वृता तवे यः स्य यना यन॥ उच्चैः नाना रपि रध्वराणां मत्तु होता नृ-
 यजे देव्यं ह वृणाग्नि नृमो प्रादे शं कुशं वा॥ अग्नि हि माता स्यात्त रि
 द्यान्मा स्ते स्ती बिद मरु मग्नि ना देवे न देवतया वृ वृता सोमे न र
 यंत रे रासा आगाग्र रे रा कुं दसाग्नि कृत्रे न प्रने न वष्टु क्कारे रा वज्र
 रा शो म्मा देहि मे व वयं हि रा स्तं हन्मि॥ स्पृष्टो यके॥ प्रतिप्रणा माधा
 ना॥ समिधु त इति प्रागतः सर्व प्रिधम मेक सर्व मृजु या ना अत्र॥

अनुवचनं ते वेदेनाहं वनीयं त्रिरुपवात् ॥ स्कवेरापुवमावा रमा
 वा रमति ॥ इदं प्रजापतये स्वाहा ॥ इदं प्रजापतये नमः ॥ अजि
 मं जिह्मं मृदु ॥ इधमन्नं रुनैरनुपदिधिमस्माह्वये वाजं त्रिदित्रिः
 स्त्रिः परिक्रामं ॥ अजे वाजं त्रिधा जं वासरि स्वां तं वाजं त्रितयं
 म्माजि ॥ ३ ॥ यद्विशतः पश्चादुत्तरतश्च ब्रह्मी मुपदि ॥ अपरमाह
 वनाय यं जलिकरोति नमो देवेभ्यः स्वाहा पितृभ्यः इति यद्विशत
 ५ तानं ॥ नमो देवेभ्यः स्वाहा पितृभ्यः ॥ अपरमाह ॥ ५ तं यं
 रुद्रं रुद्रापाणिनां रुद्रं प्रतिगच्छ ॥ मृगं मे मृदुति रुद्रं पशुता वा
 दाया ॥ मृगं मे मृगं मास्तं संकनमस्य देवेभ्यः आ ज्यं संज्या मास
 मं वीर्या ॥ यद्विशतं त्रिका मयं वीर्या विष्णुविति ॥ अं वीर्या विष्णो मा
 वा वक्रजिह्वं ॥ परिधि न पश्ये शांसं यं हो रयतः ॥ सलो न तो द

॥१८५॥-

॥१८५॥-

मृ

दिशो नाश्रुतः ॥ वसुमतिमित्रवत्साया ॥ वसुमतिमये ते काया मुपस्थे
 यं विष्णोः स्मृता नमसि ॥ २ ॥ इत इं रु इति रुद्रा रुद्रावा रं ॥ इत इं रु
 वी रं मृकुरुणे दूधो द्यु र आ स्मृता ॥ अजे वै इ हो त्रं वे दूत्यं मवतो
 वां या वा पृथ्वी वा अव तं द्या वा पृथ्वी वा आष्ट कु दे वेभ्य इं रु आ जं
 न रु विश्वा नृ स्वा हा ॥ इ यमिं द्या य नमः ॥ अ सः स्पृ चिं यं स्त
 ना वेत्त नृ द्वाधं वा ॥ स म न किं स द्यो ति खेति ॥ सं ज्यो ति स्वा ज्यो
 ति ॥ गच्छ तां ॥ तिथा यस्तु वै ॥ इतं वे द्या पजेता ॥ इधमन्नं रुनो न्मा
 दाया ॥ अ वा य ॥ अस्क सो नाद ॥ अजि दे वो दे वो हो ता दे वा
 न्यदि दि द्यां प्रिकिन्नाम नष्टं रु रत वत् ॥ अमु व अमु वदिति ॥
 ब्रह्मन् द्या व वत्त द्वा हराणां अस्थ यज्ञस्य प्रावितारः ॥ अमु कु का
 म्मा हो ता मा नृ राः ॥ सं मृष्टा ऽप वि द्या तः ॥ आ सा व य म न दे वे

इत्य



112211

—112211

इतवलिमि यत्कैः कृत्वा वा या याति कृत्वा वा या द
इव न ज्ञेति

卷

11611-

स्वादान्त्राणि
स्वादाः १२

॥२६॥

ध्यायाऽप्य

1. 2. 3. 4. 5. 6. 7. 8. 9. 10. 11. 12. 13. 14. 15. 16. 17. 18. 19. 20. 21. 22. 23. 24. 25. 26. 27. 28. 29. 30. 31. 32. 33. 34. 35. 36. 37. 38. 39. 40. 41. 42. 43. 44. 45. 46. 47. 48. 49. 50. 51. 52. 53. 54. 55. 56. 57. 58. 59. 60. 61. 62. 63. 64. 65. 66. 67. 68. 69. 70. 71. 72. 73. 74. 75. 76. 77. 78. 79. 80. 81. 82. 83. 84. 85. 86. 87. 88. 89. 90. 91. 92. 93. 94. 95. 96. 97. 98. 99. 100. 101. 102. 103. 104. 105. 106. 107. 108. 109. 110. 111. 112. 113. 114. 115. 116. 117. 118. 119. 120. 121. 122. 123. 124. 125. 126. 127. 128. 129. 130. 131. 132. 133. 134. 135. 136. 137. 138. 139. 140. 141. 142. 143. 144. 145. 146. 147. 148. 149. 150. 151. 152. 153. 154. 155. 156. 157. 158. 159. 160. 161. 162. 163. 164. 165. 166. 167. 168. 169. 170. 171. 172. 173. 174. 175. 176. 177. 178. 179. 180. 181. 182. 183. 184. 185. 186. 187. 188. 189. 190. 191. 192. 193. 194. 195. 196. 197. 198. 199. 200. 201. 202. 203. 204. 205. 206. 207. 208. 209. 210. 211. 212. 213. 214. 215. 216. 217. 218. 219. 220. 221. 222. 223. 224. 225. 226. 227. 228. 229. 230. 231. 232. 233. 234. 235. 236. 237. 238. 239. 240. 241. 242. 243. 244. 245. 246. 247. 248. 249. 250. 251. 252. 253. 254. 255. 256. 257. 258. 259. 260. 261. 262. 263. 264. 265. 266. 267. 268. 269. 270. 271. 272. 273. 274. 275. 276. 277. 278. 279. 280. 281. 282. 283. 284. 285. 286. 287. 288. 289. 290. 291. 292. 293. 294. 295. 296. 297. 298. 299. 300. 301. 302. 303. 304. 305. 306. 307. 308. 309. 310. 311. 312. 313. 314. 315. 316. 317. 318. 319. 320. 321. 322. 323. 324. 325. 326. 327. 328. 329. 330. 331. 332. 333. 334. 335. 336. 337. 338. 339. 340. 341. 342. 343. 344. 345. 346. 347. 348. 349. 350. 351. 352. 353. 354. 355. 356. 357. 358. 359. 360. 361. 362. 363. 364. 365. 366. 367. 368. 369. 370. 371. 372. 373. 374. 375. 376. 377. 378. 379. 380. 381. 382. 383. 384. 385. 386. 387. 388. 389. 390. 391. 392. 393. 394. 395. 396. 397. 398. 399. 400. 401. 402. 403. 404. 405. 406. 407. 408. 409. 410. 411. 412. 413. 414. 415. 416. 417. 418. 419. 420. 421. 422. 423. 424. 425. 426. 427. 428. 429. 430. 431. 432. 433. 434. 435. 436. 437. 438. 439. 440. 441. 442. 443. 444. 445. 446. 447. 448. 449. 450. 451. 452. 453. 454. 455. 456. 457. 458. 459. 460. 461. 462. 463. 464. 465. 466. 467. 468. 469. 470. 471. 472. 473. 474. 475. 476. 477. 478. 479. 480. 481. 482. 483. 484. 485. 486. 487. 488. 489. 490. 491. 492. 493. 494. 495. 496. 497. 498. 499. 500. 501. 502. 503. 504. 505. 506. 507. 508. 509. 510. 511. 512. 513. 514. 515. 516. 517. 518. 519. 520. 521. 522. 523. 524. 525. 526. 527. 528. 529. 530. 531. 532. 533. 534. 535. 536. 537. 538. 539. 540. 541. 542. 543. 544. 545. 546. 547. 548. 549. 550. 551. 552. 553. 554. 555. 556. 557. 558. 559. 560. 561. 562. 563. 564. 565. 566. 567. 568. 569. 570. 571. 572. 573. 574. 575. 576. 577. 578. 579. 580. 581. 582. 583. 584. 585. 586. 587. 588. 589. 590. 591. 592. 593. 594. 595. 596. 597. 598. 599. 600. 601. 602. 603. 604. 605. 606. 607. 608. 609. 610. 611. 612. 613. 614. 615. 616. 617. 618. 619. 620. 621. 622. 623. 624. 625. 626. 627. 628. 629. 630. 631. 632. 633. 634. 635. 636. 637. 638. 639. 640. 641. 642. 643. 644. 645. 646. 647. 648. 649. 650. 651. 652. 653. 654. 655. 656. 657. 658. 659. 660. 661. 662. 663. 664. 665. 666. 667. 668. 669. 670. 671. 672. 673. 674. 675. 676. 677. 678. 679. 680. 681. 682. 683. 684. 685. 686. 687. 688. 689. 690. 691. 692. 693. 694. 695. 696. 697. 698. 699. 700. 701. 702. 703. 704. 705. 706. 707. 708. 709. 710. 711. 712. 713. 714. 715. 716. 717. 718. 719. 720. 721. 722. 723. 724. 725. 726. 727. 728. 729. 730. 731. 732. 733. 734. 735. 736. 737. 738. 739. 740. 741. 742. 743. 744. 745. 746. 747. 748. 749. 750. 751. 752. 753. 754. 755. 756. 757. 758. 759. 760. 761. 762. 763. 764. 765. 766. 767. 768. 769. 770. 771. 772. 773. 774. 775. 776. 777. 778. 779. 780. 781. 782. 783. 784. 785. 786. 787. 788. 789. 790. 791. 792. 793. 794. 795. 796. 797. 798. 799. 800. 801. 802. 803. 804. 805. 806. 807. 808. 809. 810. 811. 812. 813. 814. 815. 816. 817. 818. 819. 820. 821. 822. 823. 824. 825. 826. 827. 828. 829. 830. 831. 832. 833. 834. 835. 836. 837. 838. 839. 840. 84

द्विज्याम्

॥२०॥

अग्निर्ब्रह्मादिवः क ह्यत्यतिष्ठपृथिव्या अयं॥ अयं रे तोसिति न्य तो॥
 उपस्तारः॥ मध्यात्पूर्वाद्वा तत्र अवदानं गुरुतां॥ प्रत्न पस्तारः॥ दे ता
 ज्येगात्रावः॥ कर्म रं॥ नृ सावया॥ अस्तु सौषड्॥ अग्निं यत्र॥
 येऽयं ज्ञा महेऽग्निं त्रुवां यत्तु स्य रत्न स स्य ते ताव तानि पृष्ठिः स व
 से निवा त्रिः॥ दिवि ब्रह्म नं दधि मे स्य र्जं ति ह्य मजे वृषे
 दन्वा वां द्वा वौऽषड्॥ इ दमग्ने नमः॥ उपां सु॥ अग्निजो
 मा ज्यो॥ वैः॥ अ नु बृदि॥ अग्निजो मा योऽद्य वा सि दं व वः
 स प र्य ति॥ तस्मै ध तं स्रु वी र्धं गवां जो षं स्व र्धं॥ नृ॥ ध्रुवा प्राः
 प्र प मं॥ अप्या य तां ध्रुवा र्ण वृ तेन यज्ञं यज्ञं प्रति दे व प्र द्युः
 ॥ सूर्या या ऊधो दिवा उप स्य उ रुधा रा पृथिवी य ते स्मि न्॥
 एवं द्वितीयः॥ तृतीयः वतू र्यः॥ नृ सावया॥ अस्तु सौषड्॥

॥२०॥

उपां सु॥ अग्निजो मा॥ ५ वैः॥ यत्र॥ येऽयं ज्ञा महेऽपां सु॥ अग्निजो मा वा
 न्य दि वो मा त रि श्वा न त्रा रा म प्या द न्यं प रि श्ये नो अ देः॥ अग्नि
 जो मा ब्र ह्म ता वा वृ धा नो रं य ता य व क्र प्य रु लो कां वौऽषड्॥
 इ दमग्ने जो मा ज्यो॥ अग्निजो मा ज्यो म नु बृदि॥ अग्नी जो मा स वे द सा
 स ह ति व न तं जि रः॥ सं दे व त्रा व नू व यो॥ उपस्तारः॥ मध्यात्पू
 र्वाद्वा तत्र अवदानं गुरुतां॥ प्रत्न पस्तारः॥ दे ता ज्येगात्रावः॥
 कर्म रं॥ नृ सावया॥ अस्तु सौषड्॥ अग्निजो मा यत्र॥ येऽयं ज्ञा
 महेऽग्नीजो मा यव मे ता नि दिवि रो व ता न्य जि स्य सो म स क त
 अध तं॥ युवं सिध्ं र सि वा से र व द्या दग्निजो मा व सु व तं ग नी ता
 नौ ष ड्॥ इ दमग्नी जो मा ज्यो नमः॥ इ ति वो र्म मा से षि प्र धा न दो म
 आ त्र ज्ञा ज्ञा व र ति॥ अग्ने ये नु बृदि॥ अग्निः प्र जे न म न्म ता सु
 ना न स्त न्म स्वा॥ कवि वि प्रे शा वा व धोऽ॥ ध्रुवा प्राः प्र प मं॥ अप्या य

देवस्य चेति प्रतिगृह्णाति॥ देवस्य त्वाप्तवितुः प्रसयेष्वितो बहिर्गुणा पू
 ष्णो हस्ता ज्ञा॥ प्रतिगृह्णाति॥ पुनरादाय देवस्य चेति॥ देवस्य स्त्रास
 वितुः प्रसवेष्वितो बहिर्गुणा पूषो हस्ता ज्ञा॥ आद्य दे॥ अनेकु
 विप्रा ज्ञाति॥ अनेपु स्येन प्राप्तामि॥ मयेन यतैरनुपस्युता॥
 अत्र वेनि यथाति॥ सदेवो॥ प्रह्लादपान्ननामि मातृनते॥ या
 अस्तु तर्दे वतास्तु इत्यु मयंतु स्यादा हतं नठरमि दस्य गकु
 वसीता मेमा संपुण्या उपमि नात्रेऽसी देवस्य त्वा नठरे सा ययामि॥ ॥२३॥
 अप उपस्युता॥ इति पंचाव ता॥ उपस्तारः॥ दुहितो सध्या त्र
 याव दुवि॥ सिष्ट देवदा ज्ञा॥ अत्र माननां पुत्रा द्वा दीं प्रदी यीपु
 रस्तां वामाः करोति॥ इति इति प्रदाय॥ विसृजं दुहितो ति क्रा
 मति॥ इति प्रतिगृह्णा होतु रमली पर्वणा अनति॥ अवा तरे रा मा
 यथाति॥ अधो यो इति मे देहि॥ अधो योऽप्रदे शि न्याः पर्वणा उ त

मे अहं वाव स्य ति नाते दु तस्यो नो प्राणा य प्राप्तामि॥ प्रन स्य
 ति नाते दु तस्यो ज्ञेया ना प्र प्राप्तामि॥ अध रमधरे स्यु लो दकं॥
 प्रप्य मशो स्व द्वितीया॥ इतीया॥ यत्तु प्य॥ पंच मश॥ इति वा॥ सवे
 न्वा रजते॥ इति प्रा हता सह दिवा बृहता दित्ये नो पा स्या इ
 लो ह्य ता स ददि बृहता दित्ये नेलो प हता स हा त रि दे रा वा
 म देवो न वा यु नो पा स्या इति ला ह्य ता स हा त रि दे रा वा म देवो
 न वा यु नेलो प हता स पृथिव्या र पंच तरे राग्नि नो पा स्या इति ह्य
 ता सह पृथिव्या र पंच तरे राग्नि ना॥ उप हता गावः सहा शिर उ
 पमा गावः सहा शिरा ह्येता मुप हता धे नः सह स पत्रो पमां धे
 नः सह पत्रा ह्येता मुप हता गो वृत्तं पशु पमां गो वृत्तं पदी ह्य
 येता मुप हता दित्याः सप्त होतार उपमां दित्याः सप्त होतारो ह्ये
 ता मुप हतः सखा ननु उपमां सखा ननु ह्येता मुप हते ला व

विरूपमात्रिजावृद्धिर्हयतो॥ इहोपहूतेकवृत्तमात्रे॥ अग्रेयं बहिष्प
 यं करोति॥ ब्रध्मपिब्रह्मायुर्मधुह्वप्रजामेकद्वयसूक्तमेकद्वय
 एकद्वयत्रमेकद्वयविज्ञानेकद्वय॥ योस्माद्वेद्विद्यं वद्वयं द्विष्यस्तस्य
 प्रजयापसुत्रिष्यप्यस्येति॥ तं वतुर्थाहतावर्हिष्यविज्या आदि
 शति॥ इदं ब्रह्मरा॥ इदं होतु॥ इदमध्वये॥ इदं निधुस्य॥ अत्र
 पितर इति यज्ञमात्रे जपद्वि॥ अपसव्यं॥ आब्रह्म तत्र प॥ न
 अत्र पितरमादयध्वं यथा जागता वृषाग्रध्वं॥ विरुत्या मिम
 यंतेति॥ अस्मि यंतेति यथा जागता वृषाग्रध्वं॥ सव्यं॥ उदके
 पस्पृशति॥ इदं कमाद इति॥ इदं ब्रह्मरा॥ इदं होतु॥ इदम
 ध्वये॥ इदमग्नीधो॥ उदके॥ मानवीक्षतपदीमैत्रावरुणावृ
 ह्मदेव इतमपहूतेद्वेव्या अघ्वयं ब्रह्मपहूतापहूतामनुर्या॥

महं यज्ञमवाप्ते वयं नृपतिं हविर्नृपहूतेद्यावापृथिवी पूर्वजे इत
वरी देवी देवपुत्रेद्यावापृथिव्योरुपह्वाने ग्नीधे षड्वतां॥ उप
हूतो ययज्ञमानस्तत्र स्यादेव यज्यायामुपहूतो नृयसि हवि
करशरदं मे देवी हविर्नृपंतामिति तस्मिन् नृपहूतः॥ आशास
नेमहि दमिति यज्ञमज्ञो नृपति॥ मया दमिं द्रुं नृयं दधात्वस्मा
न्यायो मद्यवानं सवेतां॥ अस्मा कथं संत्वाशिषः॥ स्या नः॥
संत्वाशिषः॥ होता नृपं त्रः॥ इदेत्यागं नृपस्य नः पि नृगानि नृ
वतो राघस्यो षष्टौ शिषः॥ तस्या नो खं ते ह्यसि त्रागमशि म
हि॥ सर्वात्मानं सर्वं तन्त्रं सर्वं वीर्यं सर्वं पुरुषाः॥ षड्व
तत्र नृपं त्रः॥ प्राक्कात्पहूता पृथिवीति॥ नृपहूता पृथिवी
मातो पमं पृथिवी माता ह्यतामग्नि रग्नीध्रास्वाहा॥ नृप
हूतो द्यौः॥ पिता पमं द्यौः॥ पिता ह्यतामग्नि रग्नीध्रास्वाहा॥

अध्वर्योऽनुलावपासिं ब्रह्म ॥ ५ ॥ इति युक्ताय न मान
 आ॥ पवित्रयोर्मांतेनेतेरे रावेदिष्टमिति त्रिया न इति ॥ १ ॥ सु
 मित्रियान आपर्षध ॥ २ ॥ संतु ॥ यतमानस्य प्राणा नो पातमिति
 प्रस्तुते कसे तिष्ठेय न मानस्य प्राणा पा नो पातं ॥ ब्रह्म वा न ब्रह्मा
 प्राप्तातित्राग मस्ते परि हय ति ॥ ब्रह्म जगो य न मान त्रा ग ॥
 अ न्ना हाय मनि बाय ॥ ३ ॥ दग्ध ह्य ॥ अ तरो ब्रह्म य न मानो ह
 वा ॥ वेद्यो निधा यो ज नते ॥ प्रजापतेर्जा गो स्पृष्टं स्वायं य स्वी न्म
 राप्ता नो मे पा हि स मानवा नो मर्षे ह्यर्ग स्पृर्त अ मिधे ह्य दि ति र सि
 मा मे देष्टा अमुत्रा अमुनि लो क इ ह वा ॥ साम कि रा म्मा यं स त्र म त्रे ॥
 प्रजापति वया सम ह्य ॥ ४ ॥ स मा ग म्मा अ न्ना हायं द दा सि ब्रह्म
 ब्रह्मा सि ब्रह्म रोत्वा इ ता द्य मा मा हिं सी र दुं तो म ह्य ट सि नो ज वा ॥
 अ स्मा इ पु स मृधे यं अ न्ना हायो द दि रा ब्रह्मा दि नो र बि न्यः स म
 वि वि न ह सं प्र दि ने ॥ ब्रह्म न य स्ते वि त्रा गः स प्र ति ग ह्य तां हो न ये स्ते वि त्रा
 ह्य दा न न्या नो पा ॥

॥२५॥

॥२५॥

गः स प्रति ग ह्य तां अध्वर्यो वि ग गः स प्र ति ग ह्य तां ॥ अग्नि ह्य स्ते वि
 त्रा गः स प्र ति ग ह्य तां ॥ क इ दं क स्मा अ दा क्ता मः का मा या दा क्ता
 मो दा ता का मः प्र ति ग ह्य ता का मः स मु द मा वि दा क्ता मे न त्वा प्र ति
 ग ह्य ता मि का मे त ते ॥ श्रै स्त्वा द दा तु ॥ पृ प्ति बी त्वा प्र ति ग ह्य ता द दा तु
 सा द दि रो गु हा स य ति ह वि आ ॥ स म स्या ज्मु के ॥ स मि ध मा दा मा ह व
 ह्वे ब्र ह्म न्य स्था म्मा मि ॥ स मि ध मा धा या नि म जि सं ग ह्य ॥ ए तं त
 इ ति स मि दा मे त तः प्र सौ ति प्र ति कु ति नू या द्वा ॥ १ ॥ ए तं ते दे व स वि तु
 र्यु तं पा दु र्बु द स्त त ये ब्र ह्म रो ॥ ते न यु तं म व ते न य न प ति ते न मा मे
 वा ॥ म नो नू ति नू य ता मा न्य स्य बृ ह स्पा र्जु मि सं त ना त्व रि षं न नू ट
 स मि जं य धा तु ॥ वि श्वे दे वा स इ र मा द मे ता मो प्र ति ष ॥ ए स्या त इ ति हो ता
 नु मं त्र म ते ॥ अ जा न नू य न मा न ॥ २ ॥ ए स्या ते अ जे स मि नू मा ब र्दु स्य ना न य
 य स्या ब दि श्वि म हि न व्र म ना न प्पा सि श्वि म हि ॥ सं म्मा णि पू र्व न य प रि त्रा

नमो संताप्योद्यावापृथिवीमित्रावरुणोत्थावृष्ट्यावतं॥अनले
 त्रयोतुवयुरुत्तमोनुहोमुपजतिमध्यमस्तमितरश्मि॥अनुवयो
 नमो॥रिहाशा॥अनुनुहो॥अनुवयोतथीरहाशा॥मध्यमुपजति॥
 अनुवयोतथीरहाशा॥मनुकुवायो॥मरुतानिहृत्वा॥-॥
 मरुतोपृषतीर्गकुवन्नापृथिवीवादिबंगकृततोतोवृष्टिमा
 वहा॥इतामादाम॥इदंश्रमापृथिवीत्रदुमत्रदाधर्मसुकवा
 कमुतत्रमोवाकमुद्गास्यसुकोयप्रजेचसक्तवागणि॥इप
 मरुतीदिविस्पृषितीरोममतीतस्मिन्पतेमजमानद्यावापृ
 थिवीस्ता॥मोग्यातीरदातुअत्रक्तअपवेदेसुउरुगव्य
 तिअत्रयहरोतो॥वृष्टिग्यावारीत्यापातीनुवोमप्रोनु
 वाउर्जस्वतीपयस्वतीसुपवरणावस्वधिवरणावत
 योराविदि॥अग्निदिहद्विर्जुषतावीवृधमहोज्यायोहता॥

॥२१॥

॥२१॥

होमइदंहविर्जुषतावीवृधतमहोज्यायोहता॥अग्निदिहद्वि
 र्जुषतावीवृधतमहोज्यायोहता॥उपासु॥अग्निजोमो॥उज्जै॥
 इदंहवि॥अनुषेतामवीवृधेता॥उज्जै॥महोज्याय॥अक्रातां॥
 उपासु॥विस्तु॥इदंहवि॥अनुषेतामवीवृधेता॥उज्जै॥महोज्या
 य॥अक्रातां॥अग्निजोमाविदंहविर्जुषेतामवीवृधेतामहोज्या
 योक्रातां॥इदंदाग्रीइदंहविर्जुषेतामवीवृधेतामहोज्यायोक्रा
 तां॥इदंवाअन्यपाअन्यमनुषेतामवीवृधेतामहोज्यायोक्रातां॥अ
 ग्निहोत्रोदंहविर्जुषतावीवृधतमहोज्यायोहता॥अस्यामधे
 होत्रायादेवंगमायामाशास्ते॥यजमान॥दीक्षितविस्तु॥रामा॥आ
 मुराशास्तेस्यतास्तेमाशास्तेयमस्याषमाशास्तेमजातवनस्या
 माशास्ते॥उत्रादेवयज्यायामाशास्ते॥होत्राशास्ते॥होत्राशास्ते॥
 न्यथा॥माशास्तेविश्वेविश्वमाशास्ते॥महोत्राशास्ते॥तद
 स्यात्तदध्यात्तस्मिन्वाशास्ते॥तदग्निदेवोदेवज्योवनतेवयम

॥२५॥

मज्झिमे वेविस्सुप सुप हंये॥ अस्मा कमेस्त के वल्लो॥ व नुत्ति
तज्ज हलो॥ अ व य॥ तस्त ज्ञो पद॥ वरुणं र मज्जा ये र य जाम हे
च प्पा रं तं तस्त री प म॥ यो रा यि क्क वे व प्पा रं वि र रा ल स्य स्व
मते बा र॥ क म र प्पा रं सु द ह्यो य क्क ग्गा ज्ञा ज्ञा व ते दे व का मा दो र्ध
द॥ इ दे व वे न म म॥ नृ ती ये त धा रं प उ र स्ता स्य त्या म्मा र च हे ध म्
दे वा नो प त्नी यो नु वृ र ति॥ दे वा नो प त्नी क र म्मा रि वं नु नः पा वं नु
न स्त त ये वा न ज्ञा त ये॥ यो प्पा रं वि बा स यो अ पा म वि क्क ते त ज्ञा
दे वः सु द वाः रा म य क्क तों॥ व नुत्ति तज्ज हलो॥ अ व य॥ अ स्त
प द॥ दे वा नो प त्नी र्ध म्मा ज्ञा॥ ये र य जाम हे दे वा नो प त्नी क र म्मा
यं नु दे व प त्नी रि द्वा रा प ग्गा य च्छि रा द॥ आ रो द सी व र म्मा ज्ञा
यु त्ता नु यं नु दे वा र क्क त्ति नी नो बो र प द॥ दे वा नो प त्नी यो न म
मा॥ अ ज म्मे र ह प त नु वृ र ति॥ अ जि हे ता ग्ग र प ति स र ज्ञा

॥२६॥

अथ वे विस्सुप सुप हंये विस्सुप सुप हंये विस्सुप सुप हंये
नी५

वि स्था वे द ज नि मा ज्ञा त वे दः॥ दे वा ना सु त यो म ह्मा ना य नि षः स प य ज ता
मृ ता वों॥ अ व य॥ अ स्त ज्ञो प द॥ अ जि ग्ग र प ति य ज्ञा॥ ये र य जाम हे
नि ग्ग ह प ति ह म्मा वा ल जि र ज रं वि ता नो वि नु वि ज्ञा न सु द र्श को अ
स्म॥ सु ग्गा र्हा प त्ताः स जि हो दि दी द्वा स्म द क्क मि मी हि स मा सी वो
र प द॥ इ द म्मा ज्ञे ग्ग ह प त ये न म मा॥ अ व यो अ व यो वि त ले मे प द
स्य॥ प्र प म॥ स वि ती य म्मा र्हा दी ता॥ नृ ती य म्मा व नु र्प्य॥ पं व म॥ इ लो व स
वे न्मा र जं ते॥ नृ लो प द्वा ता स ह दि व ह ता दि ले नो पा र्मा र त्या दि ता वि
क प ह त म॥ इ ले नु ल्की मा ज्ञा य ज र म्मा॥ म यि य मि ति य ज्ञा मा ना ज प ति॥
स्तो क्क स्त वे प ग्ग ह्मा ज्ञे य द्वा य वि ति॥ अ जे य द्वा यो वि त म यो वि ति
वि द्वाः पा वि प्र सि ले पा वि द्वा रि यो पा वि द्वा र यं न्मा अ वि न नः पि हं नु
रा सु प द॥ यो नो म्मा दा ना ते यो॥ इ द म्मा ज्ञे य द्वा यो वि त म यो वि ति
मा य न म म॥ स यो म्मा र्हा य द्वा रि म्मा ज्ञे यो नु हो ति॥ अ ज म्मे र स वे र प त

Digitized by eGangotri

117011

तां४

Figure 1

अथाग्नेस्य न त्रिवास्ती अस्त्यस्मिन्नमया अवि॥ अथास्वयस्य
 ह तो या स न ह वा मू द्विषे या तो वे द्विषे वा त स्वा हा॥ इ द म जे अ मा से
 न म म॥ अतो दे वा अ न नु॥ तो वि सु वि म क मे प्रि पि वा त्रे स
 धा म रिः स्वा हा॥ ई दे वे ज्यो न म म॥ इ द वि सु वि व क मे त्रे वा
 ति ये न च॥ स मू ठ म म्म पा॥ सु रे स्वा हा॥ इ द वि सु वे न म म॥ ई नः
 स्वा हा॥ इ द म म्म जे न म म॥ ई नु वः स्वा हा॥ इ द वा य वे न म म॥ ई स्वः
 स्वा हा॥ इ द स र्वा य न म म॥ ई नु नु वः स्वा स्वा हा॥ इ द प्र ता प त
 ये न म म॥ ई व मे स्वर अ मे य तो प व ते न न म्म॥ य ते न्क त त स्मे त
 उ प य ते ति रु क्त त स्मे ते न म॥ धौ वः स रि ष य ते न्क त त स्मे त
 गा तु वि द र ति॥ ई दे वा गा तु वि दो गा तु वि वा गा तु मि त॥ म न स म्म
 स र म्म दे व य नु॥ स्वा हा वा ते धा॥ इ द वा ता य न म म॥ व दिः स

॥३१॥

॥३२॥

॥ ग क ति प्रा ण उ रु वि सु वि ति॥ उ रु वि सु वि क म म्मो रु द्र या न स्तु धि॥
 वे तं वृ त यो ने वि व प्र त्र य त प ति ति स॥ अ तो सि त तुर स्य नु मा त नु
 द्य स्मि न्प जे स्पा॥ सा ध र ता धा म स्मि न्ने ने स्मि न्नो क इ द मे
 दे नि र्य पु त्र॥ अ मू क वा म॥ अ नु सं त नो तु॥ अ ह व नी य म्म प
 ए ति षु ते॥ ई अ जे अ त प ते क त म वा दि स्वं त द श कं मे रा धि॥
 सं व र वि सो क॥ अग्ने वा आ ति सं य न प ति रा ति र्वा य न ता॥ ॥
 ब्रा ह्म रा त प ति त वे॥ पौ री सा से षि स म्म ध्य र्वा॥ द र्वा षि स म्म
 ध्य र्वा ब्रा ह्म रा मे क य प्या का ले य प्यो क सं प ने ना ह त प ति र्वा
 श्री मे न्नु प रू ष प्रि रा तु॥ ॥ सु रे पु य नु उ वा व न नु ता या वि वि
 त्र मि ति क्रा त न न्नु त्र मि तु य वृ षा प रि स्त री॥ अ रि ति तु स्मा द नु
 नु म न्नु त॥ प रि स्त री ति रु स्ता या नु वि न्ने म्म दि का त रु मि ति न्नु

राम

सो.

५७१ ७३

ह्यप्रस्ये बहुप्रि म्नु ह्यप्र वमिति तुस्मा स्तु स्थिति यद्बु ब्रा ह्म
रां तुष्पि यि तले ब्र या श्रु म्नु वे तु तर्प यती ॥२॥ तुष्पां वु
उ जयता न प्रस्कारा न्नु न्य त रुता न प्रस्कारा न्नु न्यतु
द्वतु वारु तशु न्नु शं तत रुच्छ य उ जयता न प्रस्कारा उ जय
त रुवे नान न त श्रु न न प्रस्कारा रा श मय ती ॥२॥  ॥
वतु रि म्नु वतु रि म्नु द्वा न्ना पं व रि रे व वा ॥ दु य ते व पु न द्वा
न्या न्ने य शी म्ने न मः ॥ का य न वा वा म न्ने सेंद्रि या बु ध्या
ना रा य रा य स म प या मि ॥ इ ति प द्वा न्य प चि त द्वि ती यो
ध्या यः स म प्रः ॥ सं व त ११० ॥ इ व वे द्वि ती य आ षा ठ शु दि
वी न पी न्ना वा द्वा न्ने इ म्नु न्ने म्नु व दि द्वा न्ने

॥३३॥